ॐ ।। सुख उत्पति श्री अमरलाल की ।।

ॐ ।। ॐ शांति ।। ॐ

।। श्री अमर उपासना ।। श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ श्री अमरलाल साहबि - ॐ जिंदा सुलतान ।
सुधि बुधि देवण हार - ॐ जिंदा पीर रतनाणी ।
सत्गुरू वरधारी लाल - लाल सुन्दर तो सरण ।
आदेश, आदेश, आदेश - आद पुरुष को आदेश ।
निरंजन, निरंकार, अमर पातिशाह को ।
आदेश, आदेश, आदेश ।
हरि विष्णु उदेरे लाल को - आदेश, आदेश, आदेश ।
वर धारी पुगर दास को - आदेश, आदेश, आदेश ।

ॐ ।। सुख उत्पति श्री अमरलाल की ।। ॐ

नमस्कार गुरूदेव स्वामी - सर्वच्यापी अंतयामी ।
गुरू दरियाह प्रेम सुख सागर - श्रो अमरलाल पूर्ण रत्नागर ।

१ नमो नमो देवन के देवा - नमो नमो प्रभु अलख अभेवा ।
नमो नमो जलपति, अविनाशी - नमो नमो धट धट के वासी ।
२ जल से उपजे सब संसारा - जल स्वरूप ठाकुर करतारा ।
जल है सब जीवन का जीव - गुरू दरियाह सरब का पीव ।

३ जल है गोपी, जल है कान - जल है माधव, जल भगवान ।
ब्रह्मा विष्णु महादेव देवा - अमरलाल की करत है सेवा ।

४ जल गंगा, जल यमुना, जान - अठसठ तीर्थ जल परवान ।
जल है सब राजन का राजा - जल है सब साजन का साजा ।

५ जल है सब शाहन का शाह - जल दाता जल बेपरवाह ।
जल की सेवा, जल की पुजा - एक निरंजन और न दूजा ।

६ जल परमेश्वर, जल नारायण - जल सत्गुरू, जल मुक्त करावण ।
जल है परमेश्वर का वासा - सकल जगतर जल ही परगासा ।

७ गुरू दरियाह सरब को दाता -जित किथ पूरण पुरूष विधाता ।
जल का ध्यान, ज्योति की सेवा-श्रो अमरलाल प्रभु अलख अभेवा।

८ चार खाणि जहं जगतर उपाया-जल आधार सब मांहि समाया।
जल पुरण आत्म गुरू दरियाह- सत अविनासी रहिया समाया ।

९ जल उपजावे, जल प्रति पाले - जल ही सब की सार संभाले।
जल ही रूप रंग बनि आवे - जल ही नाचे, जल ही गावे ।

१० लज ही देखे, जल ही बोले -जल ही अगम अगाध अभोले ।
ज्ल की कीमत कही न जाय - वेद पुराण रहे गुण गाये ।

११ पाणि पिता जगतर का मीत - धरती माता परम पुनीत ।
दिनसूं रैन दुइ दायी दाया - सब जग खेले धंधे लाया ।

१२ श्रो अमरलाल परमेश्वर प्यारा - सकल जगत सिरजणहारा ।
धरम राय नित तिस के आगे - करम किये का लेखा मांगे ।

१३ चित्रगुप्त तिसपास लिखने हारा-पापपुण्य लिख कहत पुकारा।

जैसे जैसे करम कमावे - तैसे तैसे फल पावे ।

१४ श्री अमरलाल के सेवक दास -स्मरण भजन करहें गुन तास।
चित्रगुप्त तिस पूछत नाहीं - धरमराय डरपे मन माहीं ।

१५ धरमराय के कारज संवारे - मुक्त भये से सर्व उधारे ।
श्री अमरलाल परमेश्वर ध्याया - अमरपुर में वासा पाया ।

१६ जिहं इहु नाम जपियो निरवाण - मुख उजल दरगह परवाण ।
जिहं आराधिया जलपति लाल - केते छूटे उन्हें नाल ।

१७ से सेवक जिस हदे वेसाही-श्री अमरलाल सुमरे मन माँहि ।
मुझ अनाथ पर कृपा कीजे - स्मरण भजन दया कर दीजे ।

१८ तुजको सुमरू प्रीत लगाय - श्री अमरलाल प्रभु होय सहाय ।
उठत बैठत चलत लाल - तुमरा ध्यान रहे नित दयाल ।

१९ जब सोवुं तब हदे राखुं - जब जागुं तब रसना भाखूं ।
इहि निस रहे तुमारा ध्यान - कर कृपा मोहे दीजे दान ।

२० तू ही अमर, तू ही ब्रह्मस्वरूप-तू ही जलपति तू ही आत्म रूप।
तू ही पाणी, तू ही गुर दरियाह - पतित उधारण तेरो नाव।

२१ तू ही राम, तू ही विष्णु कहायो - संत उबारे, दुष्ट खपायो ।
तू हि उदेरा कलियुग मांहि - रक्षा कीनी भयो सहाई ।

२२ तुमरी महिमा अपरम्पारा - वेद पुराण न पायो पार ।
श्री अमरलाल सुमरे वनबारी - दास पूजारी शरण तुमारी ।

श्री अमरलाल साहिब की सुख उत्पति सम्पूर्ण ।।

* *

बोलो श्री अमरलाल साहबि की जय

आयोलाल सभई चओ झूलेलाल
लाल जा जाटी चओ झूलेलाल